भगत रविदास – सबद ३८

नागर जनाँ मेरी जाति बिखिआत चंमारं ॥

रागु मलार, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, १२९३

नागर जनाँ मेरी जाति बिखिआत चंमारं ॥
रिदै राम गोबिंद गुन सारं ॥१॥ रहाउ ॥
सुरसरी सलल कृत बारुनी रे संत जन करत नही पानं ॥
सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ आनं ॥१॥
तर तारि अपवित्र करि मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं ॥
भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमसकारं ॥२॥
मेरी जाति कुट बाँढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस पासा ॥
अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥३॥१॥

सार: अज्ञान से भरी समाजिक व्यवस्था में, पहचान बाहरी प्रभावों से बनती है जिससे लोग स्वयं और दूसरों को भी वास्तविक विवेक के बजाय, सतही सूचक (लेबल) से परिभाषित करते और परखते हैं। हमारा आत्म-मूल्य सामाजिक प्रतिष्ठा, रूप-रंग और दूसरों से मिलने वाली स्वीकृति से जुड़ जाता है। समय के साथ हम ऐसे सामाजिक मुखौटे ओढ़ लेते हैं जिनमें सच्चाई नहीं होती और इस प्रक्रिया में हमारा वास्तविक स्वरूप अनदेखा रह जाता है। जो लोग सामाजिक या धार्मिक नियमों का पालन नहीं करते, उन्हें अक्सर मज़ाक, बहिष्कार और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। फिर भी, उन्हीं के भीतर सच्चे बोध की क्षमता निहित होती है, वह समाज द्वारा थोपे गए सीमित दायरों से परे जाकर, अपने भीतर से पहचान और आत्म-मूल्य को पुनः प्राप्त कर, साहसपूर्वक अपने वास्तविक स्वरूप को अपनाते हैं।

नागर जनाँ मेरी जाति बिखिआत चंमारं ॥

शहर के लोगों के बीच, मेरी सामाजिक पहचान एक तुच्छ चमड़े का काम करने वाली जाति के रूप में है। यह दर्शाता है कि सामाजिक और धार्मिक मान्यताएँ कैसे भेदभाव को बढ़ावा देती हैं।

रिदै राम गोबिंद गुन सारं ॥१॥ रहाउ ॥
परंतु, मेरे मन में, मैं सर्वव्यापी चेतना के अद्वितीय सार को संजोता हूँ और उस पर विचार करता हूँ। यह आंतरिक सामंजस्य को जागरूकता के साथ प्रतिध्वनि के रूप में दर्शाता है, जो सामाजिक या धार्मिक परिभाषा से परे है। (१)(विराम)

सुरसरी सलल कृत बारुनी रे संत जन करत नही पानं ॥
यदि गंगा के पवित्र जल से भी मदिरा बना दी जाए, तो ज्ञानी जन उसका सेवन नहीं करते। यह प्रतीकात्मक शुद्धता से हटकर जीती-जागती चेतना की ओर संकेत करता है क्योंकि उच्च सामाजिक स्थिति भी भ्रष्ट मानसिकता को सही नहीं ठहरा सकती।

सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ आनं ॥१॥
यदि अपवित्र मदिरा या गंदा पानी गंगा नदी में डाला जाए तब वह मिल जाता है, अलग नहीं रहता। यह प्रतीक है कि सार्वभौमिक वास्तविकता का बोध भेदभाव से ऊपर उठता है और बाहरी संगति से दूषित नहीं होता। (१)

तर तारि अपवित्र करि मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं ॥
ताड़ के पेड़ का रस, जिसका इस्तेमाल नशीली चीज़ें बनाने में होता है, उसे अपवित्र माना जाता है। मुझे अचरज है, क्या इसके पत्तों से बने काग़ज़ को भी वैसा ही माना जाना चाहिए? यह सोच मुझे अनुभव कराती है कि हमारे निर्णय किसी अंतर्निहित सत्य से ज़्यादा सामाजिक मान्यताओं पर आधारित होते हैं।

भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमसकारं ॥२॥
किन्तु जब उसी काग़ज़ पर भक्त और ज्ञानी वचन लिखते हैं तब वह धर्मग्रंथ-शास्त्र बन जाता है जिसे लोग फिर प्रणाम करते और पूजते हैं। यह विरोधाभास द्वैत में डूबी मानसिकता को दर्शाता है

जो इस वास्तविकता को नज़रअंदाज़ करती है कि सकारात्मकता और नकारात्मकता दोनों साथ-साथ रहते हैं और एक ही स्रोत से उत्पन्न होते हैं। (२)

मेरी जाति कुट बाँढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस पासा ॥
मेरी जाति का काम चमड़ा काटना और मृत पशुओं को बाँधकर बनारस के बाहर ढोना है। यह पंक्ति समाज में व्याप्त गहरे श्रम-विभाजन और बहिष्करण को उजागर करती है जो असमानता की जड़ों को दर्शाता है।

अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥३॥१॥
भक्त रविदास कहते हैं, अब मैं उन महान विद्वानों को नमन करता हूँ जो सर्वव्यापी सार्वभौमिक चेतना को आंतरिक शरण के रूप में सोचते हैं। यह अनुभूत अवस्था जातिगत ऊँच-नीच के दबाव को पार कर, ज्ञान को आंतरिक बोध के रूप में पहचानकर सामाजिक पदानुक्रम से ऊपर उठती है। (३)(१)

तत्त्व: भक्त रविदास सामाजिक और धार्मिक पहचान की उन धारणाओं की तीखी आलोचना करते हैं जो शुद्धता और अशुद्धता की हमारी समझ को नियंत्रित करती हैं। वह ताड़ के पेड़ का उदाहरण देते हैं जिसका रस नशीले पदार्थों से जुड़ा होने के कारण अशुद्ध माना जाता है जबकि उसकी पत्तियों का इस्तेमाल पवित्र धर्मग्रंथों के लिए काग़ज़ बनाने में किया जाता है। यह विरोधाभास, जिसमें एक ही पेड़ को दोषी भी ठहराया जाता है और पूजा भी की जाती है जबकि उसका मूल स्वभाव अपरिवर्तित रहता है, हमारी सोच का दोहरापन दर्शाता है। यह रूपक, ऐसी मानसिकता को दर्शाता है जो सामाजिक सुविधा के आधार पर पवित्रता या अशुद्धता को वर्गीकृत करती है जिससे संपूर्णता को देखने की हमारी क्षमता में बाधा आती है। भक्त रविदास की अंतर्दृष्टि आंतरिक सामंजस्य की परिवर्तनकारी शक्ति को उजागर करती है जो पदानुक्रमों को दूर कर, हमारी साँझा सार्वभौमिकता को अपनाती है।

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com